नबी सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम की हदीसो से फिकहा का इख्तेलाफ

हम यहां फिकहा के भरोसेमंद और मशहूर किताब के कुछ मसले लिखकर हदीस से उनका इख्तेलाफ दिखाते है ताकि मुसलमान भाई हदीस से बराबरी करने वाले कथन से बेनियाज़ होकर नबी सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम के इर्शादों को सर आंखे पर रखे कि अल्लाह ने अतीउर्रसूल फ़रमा कर उम्मत पर हुज़ूर ही की इताअत फर्ज कर दी है ।

कुत्ते का नापाक बर्तन

हदीसे नबवी सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम :-

हज़रत अबू हुरैरा रजि0 रिवायत करते हुए कहते है कि नबी सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फरमाया जब कुत्ता तुम्हारे बर्तन से पानी पी जाए तो उसे सात बार धोओ । (बुखारी, मुस्लिम)

सहीह बुखारी, किताबुल वुजु, हदीस नं0 172

अबू हुरैरा रजि0 से रिवायत है कि रसुलुल्लाह सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया जब कुत्ता किसी के बर्तन मे पानी पी ले तो उस को सात मर्तबा धोये ।

सहीह मुस्लिम, किताबुल तहारत, हदीस नं0 650

अबू हुरैरा रजि0 से रिवायत है कि रसुलुल्लाह सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया जब कुत्ता तुम्हारे बर्तन मे से पीये तो इसे सात बार धोना चाहिये ।

फिकहा का इख्तेलाफ :-

जब बर्तन से कुत्ता पी जाए उसे तीन बार धोओ । (हिदाया किताबूत्तहारत)

बुखारी मुस्लिम की हदीस के खिलाफ ये बे दलील कौल पर ध्यान दीजिये ।

बैतुल्लाह की छत पर नमाज़

हदीस नबवी सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम :-

हज़रत इब्ने उमर रजि0 रिवायत करते हुए कहते है कि नबी अकरम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम ने बैतुल्लाह की छत पर नमाज़ पढ़ने से मना किया ।(तिर्मिजी शरीफ)

फिकहा का इख्तेलाफ :-

काबे की छत पर नमाज पढ़नी जायज है । (हिदाया बाबुसस्लात फिल काबा)

औरत की इमामत का मसअला

हदीस नबवी सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम :–

नबी सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने उम्मे वरक़ा को अपने घर वालो की इमामत कराने का हुक्म दिया। (अबू दाऊद 1/87, बाबत इमामतुन्निसा)

सुनन अबू दाऊद, किताबुस्सलात, हदीस नं0 591

हज़रत उम्मे वरका बिन्ते नौफल रजि0 से मरवी है कि नबी सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम जब गज़वा ए बद्र के लिये गये तो मैने अर्ज किया कि ऐ अल्लाह के रसुल सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम मुझे अपने साथ जाने की इज़ाजत दीजिये मै आप के मरीज़ो का इलाज और खिदमत करूंगी और शायद अल्लाह तआला मुझे शहादत नसीब फरमा दे। नबी सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया – तुम अपने घर ही मे ठहरो अल्लाह तुम्हे शहादत की मौत देगा। चुनांचे ये शहीदा की लकब से पुकारी जाने लगी और इसने कुरआन पाक पढ़ा था और नबी सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम से अपने घर मे मुअज्ज़िन रखने की इज़ाजत तलब की तो आप सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इज़ाजत दे दी। इन्होने एक गुलाम और लौंडी को मौदबर बनाया था (यानी इन की मौत के बाद आज़ाद होगे)। ये दोनो एक रात इनकी तरफ उठे और एक चादर से इन का मुंह बंद कर दिया हत्ता की वह मर गयी और खुद भाग गये। सुबह को हज़रत उमर रजि0 ने लोगो मे एलान किया की जिसे उन के बारे मे कुछ इल्म हो या उन्हे देखा हो तो उन्हे ले आये। चुनांचे उन के बारे मे हुक्म दिया और वो दोनो सुली चढ़ा दिये गये और ये मदीना मे पहले आदमी थे जिन को सुली दी गयी।

सुनन अबू दाऊद, किताबुस्सलात, हदीस नं0 592

जनाब अब्दुर्रहमान बिन ख्ल्लाद से रिवायत है उन्होने हज़रत उम्मे वरका बिन्त अब्दुल्लाह बिन हारिजस रजि0 से यही हदीस बयान की है और पहली रिवायत ज्यादा कामिल है इस मे है कि रसुलुल्लाह सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम इन के हां इन की घर मे मिलने के लिये आया करते थे और इनके लिए एक मौअज्ज़िन मुकर्रर किया था जो इनके लिये अज़ान देता था और आप ने इन्हे (उम्मे वरका को) हुक्म दिया था कि अपने घर वालो की इमामत कराया करे। अब्दुर्रहमान कहते है कि मैने इनके मौअज्ज़िन को देखा था जो बहुत बुढा था।

हज़रत आयशा ताहिरा रजि0 औरतो के बीच मे खड़ी होकर औरतो की इमामत करती थी। (मुस्तदरक हाकिम बाब इमामतुल इमरात)

फिक़हा का इख्तेलाफ :–

केवल औरतो को जमाअत से नमाज़ पढ़ना मकरूह है। (हिदाया बाबुल इमामत)

हनफी भाइयो । नबी करीम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम तो केवल औरतो को भी जमाअत से नमाज़ पढ़ने की इजाज़त दे औरत की इमामत औरतों के लिए जायज़ रखी गयी लेकिन फिकहा में यह काम मना क़रार पाया जाए । सोचो तो सही हदीस की बराबरी कितनी बुरी चीज़ है और नबी सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम के हुक्म के मुकाबले मे नहीं कहना कितनी बड़ी ज्यादती है और फिर इस फिकही हुक्म से इस काम को हराम समझ रखा है कि हनफियों के यहां औरत की इमामत औरतों के लिए बिल्कुल है ही नहीं ।

नाबालिग़ की इमामत

हदीस नबवी सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम :-

अम्र बिन सलमा रजि0 ने छ: या सात साल की उम्र मे लोगों की इमामत करायी । (बुखारी)

सहीह बुखारी, किताबुल मगाज़ी (जंगो का बयान), हदीस नं0 4302

अबू अय्युब ने बयान किया कि मै अम्र बिन सलमा के पास गया और उनसे इस्लाम लाने के मुत्तालिक सवाल किया तो उन्होने बताया – हम लोग ऐसे चश्मे के पास रहते थे जहां से आम रास्ता था । जब इधर से कोई भी काफिला गुज़रता तो लोगो का हाल-चाल मालूम कर लेते और यह पूछते कि नबी सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम का क्या हाल है ? तो लोग बयान करते : उन का तो यह कहना है कि अल्लाह ने मुझे अपना नबी बना कर भेजा है और अल्लाह मुझ पर वह्यि नाज़िल करता है, या अल्लाह ने मुझ पर वह्यि नाज़िल की है । (अबू सलमा कहते है कि इस तरह जब वह कोई आयत सुनते तो) मैं उसे फौरन याद कर लेता, क्योंकि वह बातें दिल को लगती मालूम होती थी । इधर पूरे अरब के लोग इस्लाम में दाखिल होने के लिये मक्का फतह हो ज़ाने का इंतेज़ार कर रहे थे । इन लोगो का कहना था कि इस नबी कुरैश वालों को निपट लेने दो अगर उन्होंने मक्का वालों को हरा दिया तो यकीनन मे वह नबी है । चूनांचे जब मक्का पर फतह हासिल हो गयी तो सभी लोगो ने एक दसूरे से बढ़ कर इस्लाम लाना शुरू कर दिया, उन मे मेरे वालिद भी थे । जब मेरे वालिद (इस्लाम लाकर मदीना से) वापस हुये तो कहने लगे अल्लाह की कसम मै एक सच्चे नबी के पास से आ रहा हूं, उन्होंने बताया है कि फलां नमाज़ को फ़लां वक्त पर इस तरह पढ़ा करो, और जब नमाज़ का वक्त हो जाये तो एक शख्स अज़ान दे दे और जिस को ज्यादा कुरआन याद हो वह इमामत करा दे । अब लोगो ने यह मालूम करना शुरू किया कि किस को ज्यादा कुरआन याद है, तो मुझे से ज्यादा कुरआन याद करने वाला कोई न मिल सका, क्योकि मैं आने-जाने वालों की ज़बानी सुन कर याद कर लिया करता था । इसलिये लोगो ने मुझे इमाम बना लिया, हालांकि उस वक्त मेरी उम्र सिर्फ छै या सात ही साल की थी । मेरे पास केवल एक चादर थी जब मै (उसे लपेट कर) सज्दा करता तो ऊपर उठ जाती और (पीछे की जगह) खुल

जाती । यह देख कर कबीला की एक औरत कहने लगी : तुम लोग अपने इमाम साहब का चूतड़ तो पहले ढक दो । तो उन्होने कपड़ा खरीद कर मेरे लिये एक कमीस सिलवा दी । मुझे उस कमीस को पहन कर जितनी खुशी हुयी, उतनी किसी और चीज़ से नहीं हुयी ।

लोगो ने अम्र बिन सलमा रजि0 को अपना इमाम बनाया उनके पीछे नमाज़ पढ़ी । नबी करीम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम को इस इमामत का जरूर पता था यदि बच्चे की इमामत नाजायज होती तो हुजूर मना कर देते या जरूर आसमान से वही आ जाती कि बच्चे की इमामत जायज़ नहीं । बच्चे की इमामत से अल्लाह और उसके रसुल सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम की खामोशी बच्चे की इमामत के जायज़ होने की दलील है ।

फिकहा का इख्तेलाफ :-

नही जायज वास्ते मर्दो के नमाज़ पढ़ें पीछे औरत के या बच्चे के । (हिदाया जिल्द 1 बाबुल इमामत)

हिबा की हुई चीज का मसअला

हदीस नबवी सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम :-

हज़रत इब्ने अब्बास रजि0 रिवायत करते हुए कहते है कि – नबी अकरम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हिबा(भेंट) की हुई चीज़ को वापस लेने वाला कुत्ते की तरह है जो अपनी उल्टी करके चाट लेता है । (बुखारी शरीफ)

सहीह बुखारी, किताबुल हिबति (हदिया तोहफे देने का बयान), हदीस नं0 2589

इब्ने अब्बास रजि0 से रिवायत है कि नबी करीम सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया किसी को तोहफा देकर वापस ले लेने वाला उस कुत्ते के जैसा है जो खुद कै (उल्टी) करके खुद ही चाट लेता है।

सहीह मुस्लिम, किताबुल हिबा, हदीस नं0 4170,4171,4172,4173,4174,4175,4176

अब्दुल्लाह बिन अब्बास रजि0 से रिवायत है रसुलुल्लाह सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया हिबा को लौटाने वाले की मिसाल कुत्ते की है जो कै करके फिर अपनी कै को खाने जाता है ।

फिकहा का इख्तेलाफ :-

जब किसी ग़ैर आदमी को कोई चीज़ हिबा कर दी जाए तो हिबा करने वाले को उसे वापस लेने का हक है । (हिदाया किताबुलहिबा)

इसतस्क़ा की नमाज़ बा जमाअत

हदीस नबवी सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम :–

अब्दुल्लाह बिन जैद रजि0 रिवायत करते हुए कहते है कि नबी करीम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम नमाज़ इसतस्क़ा के लिए सहाबा को लेकर ईदगाह की ओर निकले और दो रकअत नमाज़ ऊंची किरअत के साथ पढ़ायी ।. किबले की ओर ही अपनी चादर पलटायी ।(बुखारी, मुस्लिम)

सहीह बुखारी, अबवाबुल् इस्तिस्का,(बारिश की नमाज़) हदीस नं0 1025

अब्बास बिन तमीम बयान करते है मेरे चचा (अब्दुल्लाह बिन जैद अंसारी) ने रिवायत किया कि जिस दिन नबी करीम सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम बारीश की दुआ के लिये निकले, मैं ने देखा आप सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी पीठ लोगो की तरफ फिरायी फिर किब्ला की तरफ मुंह कर के दुआ फरमायी, फिर अपनी चादर उलट दी और हम दो रकअत नमाज़ पढ़ाई दोनो रकअतों मे बुलन्द आवाज से किरात भी की ।

फ़िक़्हा का इख्तेलाफ :–

इमाम अबू हनीफा रह0 ने कहा कि इसतस्का के समय नमाज़ बा जमाअत मसनून नहीं । (हिदाया बाबुल इसतस्का)

जनाजे की गायबाना नमाज़

हदीस नबवी सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम :–

अबु हुरैरहा रजि0 रिवायत करते है कि जिस दिन शाह नज्जाशी की वफात हुई नबी करीम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्ल्म ने उसकी वफात की खबर(बजरिये वह्ही)दी फिर हुजूर सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम सहाबा रजि0 को लेकर ईदगाह तशरीफ ले गए उन्हे लाईनों मे खड़ा करके नज्जाशी की जनाज़े की नमाज चार तकबीरों से पढ़ायी । (बुखारी, मुस्लिम)

सहीह बुखारी, किताबुल जनाइज़, हदीस नं0 1245

अबू हुरैरा रजि0 रिवायत करते है कि नबी करीम सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हब्शा के बादशाह नजाशी के इन्तेकाल की खबर उसी दिन दे दी, जिस दिन उनका इन्तेकाल हुआ, फिर ईदगाह तशरीफ ले गये और सफ बंदी कर के चार तकबीरे कहीं ।

फिकहा का इख्तेलाफ :–

नमाज ग़ायबाना जायज नहीं । (दुर्रे मुख्तार जिल्द 1 बाब सलातुल जनाइज)

जमाअत मे इकहरी तकबीर

हदीस नबवी सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम :–

नबी करीम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम ने बिलाल रजि0 को हुक्म दिया कि वे अज़ान के कलिमे दोहरे कहे और तकबीर के कलिमे इकहरे कहें सिवाए कद्द क़ामति स्सलात के । (बुखारी, मुस्लिम)

सहीह बुखारी, किताबुल अज़ान, हदीस नं0 603

अनस बिन मालिक रजि0 रिवायत करते है कि नमाज़ के एलान के लिये लोगो ने आग जलाने और घन्टे बजाने का जिक्र किया, और यहूद और नसारा के एलान कने के तरीकों पर भी गौर किया आखिर मे बिलाल रजि0 को हुक्म दिया गया कि दो–दो मर्तबा अज़ान के कलिमे कहे और इकामत को एक–एक बार ।

सहीह बुखारी, किताबुल अज़ान, हदीस नं0 605

अनस बिन मालिक रजि0 बयान करते है कि बिलाल रजि0 को यह हुक्म दिया गया कि अज़ान के अल्फाज़ दो–दो बार और तकबीर के एक–एक बार कहें, मगर ''कद का–मतिस्सलात'' दो बार कहे ।

फिकहा का इख्तेलाफ :–

और इकामत अज़ान की तरह दोहरी है । (हिदाया बाबुल अज़ान)

हदीस शरीफ मे नबी सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम बिलाल रजि0 को हुक्म दे रहे है कि तकबीर के कलिमे इकहरे कहे जाएं लेकिन हनफी मज़हब मे हुक्म दिया जाता है कि तकबीर के कलिमे दोहरे कहे जाएं और फिर इस हुक्म के पालन मे सारे मुल्क के अंदर सदियों से दोहरी तकबीरे कहीं जा रही है क्या मजाल कि कोई हनफी भाई इकहरी तकबीर कह जाए । सारी जिन्दगी नहीं कहेगा बल्कि इकहरी (यदि कोई कहे कि दोहरी हदीस भी एक रिवायत मे आयी है तो जवाब यह है कि हम इस रिवायत की सनद की बात किए बिना मान लेते हैं और इसीलिए दोहरी तकबीर कहने वाले को रोकते टोकते नहीं इकहरी तकबीर कहने वालों को रोकने टोकने वाले अल्लाह के सामने जवाब देने के दिन को याद करके बताएं कि वे बुखारी मुस्लिम की इस हदीस को क्यों नहीं मानते जिसमें बिलाल रजि0 को इकहरी तकबीर कहने का हुक्म दिया है हनफ़ी भाई इस चौदहंवी के चांद की चांदनी मे बैठना क्यों पसंद नहीं करते । और नबी सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम के हुक्म के सामने क्यो सर नहीं झुका देते) तकबीर

कहने वालों से लड़ाई झगड़े होते हैं ये लड़ाई झगड़े केवल तकलीद जामिद की वजह से हैं । हनफी भाइयों को चाहिए कि वे बुखारी मुस्लिम की इस हदीस पर अमल करके इकहरी तकबीर भी कह लिया करें और याद रखे कि जो तकलीद बुखारी व मुस्लिम की हदीस से पीछे हटाये आप इस तरह की तकलीद से पीछे हट जाऐं ।

नमाज की इमामत का मसअला

हदीस नबवी सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम

नबी अकरम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम का इर्शाद है कि इमामत करे लोगो की वह जो सबसे ज्यादा कुरआन का क़ारी हो और अगर किरअत के मामले मे सब बराबर हो तो फिर सबसे ज्यादा सुन्नत को जानने वाला इमामत करे यदि सुन्त के इल्म मे भी सब बराबर हो तो सबसे पहले हिजरत करने वाला इमामत करे और अगर इसमे मे भी सब बराबर हो तो फिर जो उम्र मे सबसे बड़ा हो वह इमामत करें । (सही मुस्लिम)

सहीह मुस्लिम, किताबुल मसाजिद, हदीस नं0 1532

अबू मसऊद अंसारी रजि0 कहते है कि रसुलुल्लाह सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि कौम की इमामत वह करे जो कुरआन ज्यादा जानता हो अगर कुरआन मे बराबर हो तो जो सुन्नत ज्यादा जानता हो, अगर सुन्नत मे बराबर हो तो जिस ने पहले हिजरत की हो, अगर हिजरत मे बराबर हो तो जो इस्लाम पहले लाया हो, और किसी की हुकुमत की जगह मे जाकर इस की इमामत न करे और न इस के घर मे इस की मसनद पर बैठे मगर इस के हुक्म से । अशज ने इस्लाम की जगह उम्र को जिक्र किया यानि जिस की उम्र ज्यादा हो ।

फिकहा का इख्तेलाफ :–

इमामत का सबसे बढ़कर हकदार वह है जो सुन्नत का सबसे ज्यादा जानने वाला हो यदि इसमे बराबर हो तो फिर वह जो सबसे ज्यादा कुरआन का कारी हो यदि इसमे सब बराबर हो तो फिर जो सबसे ज्यादा नेक है यदि इसमे सब बराबर है तो फिर सबसे बड़ी उम्र वाला इमामत का हकदार है । (हिदाया जिल्द 1 बाबुल इमामत)

अब हदीस पाक मे नबी सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम की चार सूरतों को फिकहा की इन चार सूरतों का मुकाबला करें । हुजूर सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम ने पहले नम्बर पर इमामत का सब से बड़ा हकदार कुरआन मजीद का सबसे ज्यादा कारी को फरमाया है और फिकहा में पहले नम्बर पर सबसे ज्यादा सुन्नत का जानने वाला फरमाया गया है मतलब यह कि नबी सल्लाल्लाहू के हुक्म को

बदल दिया गया है । दूसरे तीसरे नंबर को भी बदल दिया और चौथी सूरत बहाल रहने दी ।

जालिमो ने यही बस नहीं किया बल्कि 21 सूरते और बनाई मुलाहिजा करें –

1. सबसे ज्यादा इमामत का हकदार सबसे ज्यादा नमाज के हुक्म जानने वाला है ।
2. फिर सबसे अच्छी तिलावत करने वाला ।
3. फिर सबसे ज्यादा नेक ।
4. फिर सबसे ज्यादा उम्र वाला ।
5. फिर सबसे ज्यादा अच्छे चाल चलन वाला ।
6. फिर सबसे ज्यादा खुबसूरत चेहरे वाला ।
7. फिर सबसे ज्यादा शरीफ नस्ल वाला ।
8. फिर सबसे अच्छे लिबास वाला ।
9. फिर सब बराबर हो तो पर्ची डाल ले ।
10. या फिर लोगो को हक है जिसे चाहे पसंद कर ले ।
11. फिर ज्यादा रौनकदार चेहरे वाला ।
12. फिर सबसे बढ़कर नस्ब वाला ।
13. फिर सबसे बढ़कर अच्छी आवाज़ वाला ।
14. फिर सबसे खुबसूरत बीवी वाला ।(अपनी बीवियों को लेकर मस्जिद आना चाहिये)
15. फिर सबसे ज्यादा माल वाला ।
16. फिर बड़े सर और छोटे आला (शर्मगाह) वाला ।
    (अल्लाह इन पर तेरी ढेरो लानते नाजिल हो आमीन)
17. फिर बहुत ज्यादा दर्जे वाला ।
18. फिर मुसाफिर के मुकाबले ठहरने वाला ।
19. फिर असली आजाद, आजाद किए गए गुलाम के मुकाबले पर ।
20. फिर वुजू के बदले जिसने तयम्मुम किया है वह गुस्ल के बदले तयम्मुम करने वाला पर ।
21. फिर भी अगर लोगो मे इख्तेलाफ हो तो जिसे चाहे इमाम बना ले ।
    (दुर्रे मुख्तार)
    (सोचो भाईयो क्या जवाब दोगे अल्लाह को)

नमाज का अव्वल समय

हदीस नबवी सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम:–

हजरत इब्ने अब्बास रजि0 रिवायत करते हुए कहते है कि नबी सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि इमामत की मेरी जिबरील अलैहि0 ने बैतुल्लाह मे और जुहर की नमाज पढ़ायी । जब सूरज ढल गया और उसको छाया एक तमसे के जितने हो गयी और अस्र की नमाज़ में उस समय पढ़ायी जब हर चीज़ की परछायी उसके बराबर हो गयी ।(अबू दाऊद, तिर्मिजी)

सुनन अबू दाऊद, किताबुस्सलात, हदीस नं0 393

जनाब नाफे बिन जुबैर बिन मुतअईम हज़रत इब्ने अब्बास रजि0 से रिवायत करते है कि रसुलुल्लाह सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया ''जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने बैतुल्लाह के पास मेरी दो बार इमामत कराई पहली बार मुझे ज़ुहर की नमाज पढ़ाई उस वक्त जबकि सुरज ढल गया और साया तस्मे के बराबर था और अस्र की नमाज़ पढ़ाई जब इस का साया इस के बराबर हो गया और मगरिब की नमाज़ पढ़ाई जिस वक्त की रोज़ेदार रोज़ा खोलते है और ईशा की नमाज़ पढ़ाई जब की सुर्खी इफ्क मे गायब हो गई और फज्र की नमाज़ पढ़ाई जब की रोज़ेदार पर खाना पीना हराम हो जाता है । जब दूसरा दिन हुआ तो मुझे ज़ुहर की नमाज़ पढ़ाई जबकि इस का साया इस के मिस्ल था और अस्र की नमाज़ पढ़ाई जबकि इस का साया दो मिस्ल था और मगरिब की नमाज़ पढ़ाई जबकि रोज़ेदार रोज़ा खोलते है और ईशा की नमाज़ पढ़ाई जबकि रात का तिहाई हिस्सा गुजर गया और मुझे फज्र की नमाज़ पढ़ाई और खूब सफेदी की । फिर जिब्रईल अलैहिस्सलाम मेरी तरफ मुतवज्जो हुए और कहा ऐ मुहम्मद आप से पहले अंबिया के यही अवकात है । और नमाज के अवकात इन दोनो वक्तो के दरमियान है ।

इस हदीस मे नबी करीम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम की ज़बानी मालूम हुआ कि जब हर चीज की परछायी उसके बराबर हो जाए तो यह नमाज अस्र का अव्वल और नमाज जुहर का आखिरी समय है मतलब जुहर खत्म और अस्र शुरू है लेकिन हनफियो का तुर्रा देखिये –

फिकहा का इख्तेलाफ :–

हजरत इमाम अबू हनीफा रह0 के निकट आखिरी वक्त जुहर का, अव्वल समय अस्र का वह है जब हर चीज की परछायी उससे दो गुनी हो जाये । (हिदाया जिल्द 1 बाबुल वक्त)

भाइयो । देखा आपने नबी करीम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम तो फरमाऐं की परछायी थोड़ी कम होने पर जुहर का समय जाता रहा और अस्र का समय शुरू हो गया लेकिन हिदाया के लिखने वाले जनाब इमाम अबू हनीफा रह0 कहते है अभी जुहर का समय नहीं गया और अस्र का समय शुरू नहीं हुआ मतलब नबी सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम थोड़ी परछायी कम होने पर खत्म और अस्र शुरू

बताएं लेकिन हजरत इमाम अबू हनीफा रह0 कहें नहीं परछायी दोगुनी होने पर जुहर खत्म और अस्र शुरू होती है । अफसोस हनफी भाईयों का अमल हजरत इमाम अबू हनीफा रह0 मस्जिदों मे कभी नमाजे अस्र अव्वल समय नहीं पढ़ते मतलब यह कि नबी सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम की हुक्म ऊदूली करते हुए नहीं डरते ।

नमाज़ो का जमा करना

हदीस नबवी सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम :-

हजरत इब्ने अब्बास रजि0 रिवायत करते हुए कहते है कि नबी करीम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम जब सफर करते होते तो रास्ते मे ही जुहर अस्र और मगिरब व ईशा को जमा करके पढ़ते थे । (बुखारी)

सहीह बुखारी, अबवाबु तकसीरिस्सलाति,(कस्र का बयान) हदीस नं0 1106

सालिम अपने वालिद अब्दुल्लाह से रिवायत करते है कि नबी करीम सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम जब सफर के लिये जल्दी निकलना चाहते तो मगरिब और ईशा को एक साथ जमा करके पढ़ते ।

सहीह बुखारी, अबवाबु तकसीरिस्सलाति,(कस्र का बयान) हदीस नं0 1107

इब्ने अब्बास रजि0 से दूसरी सनद से रिवायत है कि नबी करीम सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम जुहर और अस्र की नमाज़ो को भी मिला कर पढ़ लेते जब सफर पर निकलते । और इसी तरह मगरिब और ईशा को भी ।

सहीह बुखारी, अबवाबु तकसीरिस्सलाति,(कस्र का बयान) हदीस नं0 1108

अनस बिन मालिक दूसरी सनद से रिवायत है कि नबी करीम सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम मगरिब और ईशा को सफर मे मिला कर पढ़ते इस हदीस को अली बिन मुबारक ने भी यहया से, उन्होने हफ्स से और उन्हो ने अनस बिन मालिक रजि0 से रिवायत किया ।

हदीस से मालूम हुआ कि दो नमाज़ो को एक साथ पढ़ना सफर मे जाइज़ है एक साथ पढ़ने की दो शक्ले है 1 जमा तकदीम यानि ईशा और अस्र की नमाज़ को मगरिब और जुहर के वक्त मे मिला कर पढ़ना 2 जमा ताखीर जुहर और मगरिब को अस्र और ईशा के साथ पढ़ना ।

हुजुरे अकरम सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम जब सुरज ढलने के पहले सफर शुरू करते तो जुहर की नमाज को ताखीर करके अस्र के वक्त मे ठहरते और जुहर और अस्र एक साथ अदा करते, और अगर सुरज ढलने के बाद सफर शुरू करते तो फिर पहले जुहर के वक्त मे ही अस्र की नमाज अदा करते फिर सफर शुरू करते । इसी तरह अगर अस्र के बाद सफर शुरू करते तो फिर मगरिब के लिए

नही ठहरते और ईशा के वक्त मे मगरिब और ईशा एक साथ मिलाकर पढ़ते । इसी तरह अगर मगरिब के वक्त सफर शुरू करते तो फिर मगरिब की नमाज के साथ ही ईशा की नमाज भी अदा कर लेते ।

फिकहा का इख्तेलाफ :–

हज के मौके के सिवा किसी और समय दो फर्ज नमाजों को जमा करके नहीं पढ़ना चाहिये । (शरह विकाया जिल्द 1 किताबुस्सलात)

नबी करीम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम ने दीन मे जो आसानी रखी थी उसे फिकहा ने उठा दिया ।

एक वित्र का मसअला

हदीस नबवी सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम

नबी करीम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम इर्शाद फरमाते है जो वितर तीन रकअत पढ़ना चाहे वे तीन रकअत पढ़े और जो एक रकअत वितर पढ़ना चाहे वह एक वितर पढ़ ले ।(बुखारी 2/107, मुस्लिम 4/1643, अबू दाऊद 1/201, इब्ने माजा82, नसई 1/200)

सहीह बुखारी, अबवाबुल वित्र,(वित्र के मसाइल) हदीस नं0 990

इब्ने उमर रजि0 रिवायत करते है किसी सहाबी ने नबी करीम सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम से रात की नमाज के मुत्तालिक मालूम किया तो आपने फरमाया रात की नमाज़ दो–दो रकअत है फिर जब सुबह हो जाने का डर हो तो एक रकअत पढ़ लो यह एक रकअत उस रात की सारी नमाज़ को ताक बना देगी ।

सहीह मुस्लिम, किताबुल मुसाफिरीन,(कस्र का बयान) हदीस नं0 1759

अबी मजलीज़ ने कहा मैने इब्ने अब्बास रजि0 से वित्र के बारे मे पुछा तो उन्होने ने कहा सुना मैने रसुलुल्लाह सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम से की वो एक रकअत है आखिर शब मे और पूछा मैने इब्ने उमर रजि0 से तो उन्होने कहा सुना मैने रसुलुल्लाह सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम से आप फरमाते है वो एक रकअत है आखिर शब मे ।

फिकहा का इख्तेलाफ :–

वितर तीन रकअत है । (हिदाया बाबुस्सलात)

तयम्मुम का मसअला

हदीस नबवी सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम

नबी करीम सल्लाल्लाहू ने अपने दोनो हाथ मट्टी पर मारे फिर फूंक कर अपने चेहरे पर मले और दोनों गट्टो पर मले । (बुखारी व मुस्लिम)

सहीह बुखारी, किताबुत्तयम्मुम, हदीस नं0 338

सईद बिन अब्दुर्रहमान बिन अबज़ा अपने वालिद से रिवायत करते है कि एक शख्स उमर रजि0 के पास आ कर कहने लगा कि अगर मुझ को जनाबत (यानी गुस्ल की हाजत) पड़ जाये और पानी न मिलते तो मै क्या करूं? यह सवाल सुनकर अम्मार बिन यासिर ने उमर रजि0 को याद दिलाया कि क्या आप को वह वक्त याद नहीं है जब मै और आप दोनों सफर मे थे और दोनो ही जुनुबी हो गये थे (पानी था ही नहीं इसलिये) आप ने तो नमाज़ ही नही पढ़ी लेकिन मैने ज़मीन पर लोटपोट कर नमाज़ पढ़ ली थी, फिर जब इस वाक्ये को नबी सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने बयान किया तो आप सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया था कि तुम्हें बस इतना ही काफी था और आप ने अपने दोनो हाथ ज़मीन पर मारे फिर उन्हे फूँका और दोनो हथेलियों से चेहरे और पहुंचो का मसह किया ।

नबी अकरम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम के अमल से एक चोट साबित हुई लेकिन देखिये कमाल –

फिकहा का इख्तेलाफ:–

और तयम्मुम मे दो चोट है । (हिदाया बाबुल तयम्मुम)

शराब का सिरका बनाना

हदीस नबवी सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम

हजरत अनस रजि0 से रिवायत है कि नबी सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम से पूछा गया कि शराब का सिरका बना लिया जाए । आपने फरमाया कभी नही ।(मुस्लिम)

सहीह मुस्लिम, किताबुल शराब, हदीस नं0 5140

अनस रजि0 से रिवायत है कि रसुलुल्लाह सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा गया कि क्या शराब का सिरका बना लिया जाए ? आपने फरमाया ''नहीं'' ।

फिकहा का इख्तेलाफ :–

शराब का जब सिरका बन जाए तो शराब हलाल हो गई। आप ही सिरका बन जाये या किसी चीज के मिलाने से सिरका बना लिया जाए हलाल है और शराब का सिरका बनाना मकरूह नहीं है। (हिदाया किताबुल अशरबा)

कुत्ते का खरीदना व बेचना

हदीस नबवी सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम

नबी करीम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम ने कुत्ते की कीमत ज़ानिया की. जिना की मज़दूरी और काहिन की मजदूरी से मना किया है। (मिश्कात बहवाला बुखारी मुस्लिम)

सहीह मुस्लिम, किताबुल मसाकात और इजारत, हदीस नं0 4009

अबू मसऊद अंसारी रजि0 से रिवायत है मना किया रसुलुल्लाह सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कुत्ते की कीमत से और किसी रंडी फहशा की खर्ची से और नजुमी की मिठाई से।

सहीह बुखारी, किताबुल इजारह, हदीस नं0 2282

अबू मसऊद अंसारी रजि0 से रिवायत है कि नबी करीम सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कुत्ते की कीमत,. जिना कराने वाली औरत (वेश्या) की आमदनी और काहिन (मुस्तकबिल ज्योतिषी भविष्य बताने वाला) की मज़दूरी से मना फरमाया है।

फिकहा का इख्तेलाफ

कुत्ते का खरीदना बेचना जायज है। (हिदाया किताबुल ब्योह)

नफ़ल पढ़ने वाले के पीछे फर्ज पढ़ने वालो का मसअला

हदीस नबवी सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम :–

हज़रत जाबिर रजि0 से रिवायत है कि हज़रत मआज़ बिन जबल रजि0 नबी सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम के पीछे नमाज (इशा) पढ़ते फिर कौम के पास जाकर उनकी इमामत करते।(बुखारी, मुस्लिम हदीस नं0 465)

सहीह बुखारी, किताबुल अज़ान, हदीस नं0 700

जाबिर बिन अब्दुल्लाह रजि0 रिवायत करते है कि मुआज़ बिन जबल रजि0 फर्ज नमाज़ नबी करीम सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ पढ़ते और फिर अपने खानदान वालो के पास जाकर इमामत कराते।

फिकहा का इख्तेलाफ :–

और फ़र्ज पढ़नें वाले की नमाज नफ़ल पढ़ने वाले की पीछे नहीं होती । (कुतुब फिकहा)

जमाअत खड़ी होने पर सुन्नते पढ़ना

हदीस नबवी सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम :–

हज़रत अबू हुरैरह रजि0 से रिवायत है कि नबी सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जब फर्ज नमाज की जमाअत खड़ी हो जाए तो उस फर्ज नमाज़ के सिवा और नमाज़ नहीं होती । (सही मुस्लिम 710)

फिकहा का इख्तेलाफ :–

सुबह की नमाज जमाअत से हो रही है तो जो आदमी इमाम के पास पहुंचे और उसने दो रकअत नमाज सुन्नते नहीं पढ़ी हो तो वह डरे कि एक रकअत खत्म हो जाएगी और दूसरी रकअत पा लेगा तो उसे इमाम से हटकर मस्जिद के दरवाजे पर दो सुन्नते पढ़कर जमाअत मे शामिल हो जाना चाहिये । (हिदाया)

इस बात का नज़ारा अपने मुल्क की मस्जिदो मे रोज सुबह आम है । **क्या मिला लोगो को अल्लाह के रसुल सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम का दुश्मन बनाकर ।**

हजरत इमाम अबू हनीफा रह0 के मनाकिब के बयान मे तंबीहात

1. हदीस – आंहजरत सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अबू हनीफा रह0 मेरी उम्मत का चिराज है (दुर्रे मुख्तार जिल्द 1 सफा 22)
   (ये हदीस तमाम मुहद्दसीन के नजदीक मौजू है)
2. इमाम अबू हनीफा ने सौ बार अल्लाह को ख्वाब मे देखा (दुर्रे मुख्तर, जिल्द 2 सफा 21)
   फतावा काजी खान मे लिखा है कि जो शख्स ये कहे कि मैने अल्लाह को ख्वाब मे देख तो वो शख्स और बूतो की पूजा करने वाला बराबर है
   (ये दोनो कौल हनीफा फिकहा की मोतबर किताबो के है और काबिले गौर है)
3. इमाम रह0 ने अपने आखिरी हज मे काबा शरीफ के खादिमों से एक रात दाखिल होने की इजाजत मांगी तो खड़े हुए नमाज मे बैतुल्लाह के दोनो सतनो के दरमियान दोहिने पावं पर और बाया पांव दाहिनी के पुश्त पर रखा, यहां तक कि आधा कुरआन खत्म किया, फिर रूकू और

सजदा किया फिर खड़े हुए बांये पाव पर और दाहिने पावं इसकी पुश्त पर रखा, यहां तक कि कुरआन खत्म किया, फिर जब सलाम फेरा तो रोये, और मनाजत की अपने रब से और कहा, इलाही तेरे इस बंदे जईफ ने तेरी इबादत नहीं की जैसी कि तुझको लाईक है, लेकिन तुझ को जाना जैसे कि तेरे जानने का हक है, तु इस की खिदमत के नुकसान को इस के कमाल मआरफत के सबब से बख्श दे, यानि कमाल अरफान को नुकसान खिदमत का कफ्फारा कर, तो बैतुल्लाह के एक जानिब से आवाज गैबी आई कि ऐ अबू हनीफा तू ने हम को जाना जैसा कि हक मारिफत था, और अलबत्ता तू ने हमारी खिदमत की तू खूब ही खिदमत की, और हम ने तुझको बख्शा और उसको बख्शा जो तेरा ताबे हुआ उन लोगो मे से जो तेरे मजहब पर है कयामत तक (दुर्रे मुख्तार जिल्द 1 सफा 21)

(इस तरह की बातो से जब लोगो को बख्शीश का पट्टा मिल गया तो फिर अमल की जरूरत क्यो समझेगा)

4. हजरत साबित अपने बेटे इमाम अबू हनीफा रह0 को हजरत अली रदि0 के पास ले गये और दुआ करवाई। (दुर्रे मुख्तार जिल्द 1 सफा 26)

   (ये कि हजरत अली रदि0 का 40 हिजरी मे वफात पाना और इमाम अबू हनीफा का 80 हिजरी मे पैदा होना मालूम है, मगर ये मौलूफ तहजिब की तारीख दानी और सेहत रिवायत का नमूना है)

5. हजरत ईसा (नाजिल होकर) इमाम अबू हनीफा रह0 के मजहब पर हकम करेगे (दुर्रे मुख्तार जिल्द 1 सफा 24)

   (आहंजरत सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने तो ये फरमाया कि किसी नबी का रूतबा मुझ से मत घटाओं मगर इन लोगो ने हजरत ईसा अलै0 को इमाम का मुकल्लिद बना दिया।

बाब मुत्तालिक इख्तेलाफ अकवाल

1. लानत हो हमारे रब की उस शख्स पर की जो अबू हनीफा के कौल को रद करे यानि कबूल न करे। (दुर्रे मुख्तार जिल्द 1 सफा 24)
2. सहाबैन यानि इमाम अबू हनीफा रह0 के शार्गिदो इमाम मुहम्मद रह0 व अबू युसूफ रह0 ने कई मामलो मे इमाम अबू हनीफा रह0 से इख्तेलाफ किया है (दुर्रे मुख्तार जिल्द 1 सफा 24) (मुक्कलेदीन गौर फरमाये)
3. जब साहेबिन (इमाम मुहम्मद व इमाम युसूफ) और अबू हनीफा रह0 बाहम मुखतलीफ हो तो अबू हनीफा रह0 के कौल पर फतवा होगा अगरचे दूसरे की दलील कवी हो। फिर अबू युसूफ रह0 के कौल पर, फिर मुहम्मद रह0 के कौल पर, फिर हसन बिन जियाद के कौल पर, (दुर्रे

मुख्तार जिल्द 1 सफा 29,169, मुकदमा आलमगिरी जिल्द 1 सफा 116, मुकदमा हिदाया जिल्द 1 सफा 98,103)

4. जब तरफीन (अबू हनीफा रह0 और मुहम्मद रह0) व अबू युसूफ रह0 मुखतलिफ हो तो अबू युसूफ के कौल को लेगे बसबब आसानी के । (दुर्रे मुख्तार जिल्द 1 सफा 79)(गौर फरमाईये जनाब)

बाब मुत्तालिक तकलीद व इज्तेहाद

1. अगरचे मुफ्ती ने खता की हो जब भी आमी को इसकी तकलीद लाजिम है । (शरह विकाया सफा 12)
2. इजमाअ है आवाम के लिये कि तकलीद सहाबा रदि0 की अइय्यमा के मुकाबले न की जायें । (शरह विकाया सफा 12) (नऊजुबिल्लाह क्या इंसाफ है)

बाब मुत्तालिक फिकहा

1. फिकहा का खेत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रदि0 ने बोया, अलकमा रदि0 ने सींचा, इब्राहिम नखई रह0 ने काटा, हम्माद रह0 ने भुसी जुदा की, अबू हनीफा रह0 ने पीसा, अबू युसूफ रह0 ने गूंदा, मुहम्मद रह0 ने रोटिया पकाई और सब खाने वाले है । (दुर्रे मुख्तार जिल्द 1 सफा 19)
2. फिकहा का सीखना अफ़ज़ल है बाकी कुरआन के सीखने से । (दुर्रे मुख्तार जिल्द 1 सफा 12, और आलमगिरी जिल्द 4 सफा 359) (अल्लाह इनपर रहम न कर)
3. पूरे कुरआन पढ़ने से फिकहा पढ़ना अफ़ज़ल है । (आलमगिरी जिल्द 4 सफा 359)
4. किताब दुर्रे मुख्तार बाजन नबवी सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम तालिफ हुई । (दुर्रे मुख्तार जिल्द 1 सफा 7) (अल्लाह की हजार बार लानत हो इनपर)
5. ख्वाब मे आहंजरत सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम ने अपनी जबान मातिन के मूंह मे दाखिल की इस के बाद तालिफ इस के मतन की शुरू की । (दुर्रे मुख्तार जिल्द 1 सफा 8)
6. दुर्रे मुख्तार की असनाद आहंजरत सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम के वास्ते से अल्लाह तक पहूंचती है । (दुर्रे मुख्तार जिल्द 1 सफा 9)
   (एक मसले की सनद तक भी तो इमाम साहब रह0 तक नहीं पहूंचती है । अल्लाह तक क्या पहूंचेगी, अल्लाह इनको पकड़)

बाब मुत्तालिक अकाईद

देवबंदी और बरेलवी अकीदे मे मुक्कलीद है इमाम अबू हसन अशअरी, और इमाम अबू मंसूर मातुरीदी के और मसाइल मे अबू हनीफा रह0 के।

1. मुसलमान फासिक आम फरिश्तो से अफज़ल है। (दुर्रे मुख्तार जिल्द 1 सफा 261)
2. जो अहले किबला सहाबा रदि0 को गालियां देना जाईज समझे वो काफिर नहीं। (दुर्रे मुख्तार जिल्द 1 सफा 261) (या अल्लाह.... तु रहम न करना)
3. जो अल्लाह की सिफात और दीदार के मुन्किर है वो काफिर नहीं। (दुर्रे मुख्तार जिल्द 1 सफा 261) (या फिर तु बता की काफिर कौन है)

बाब मुत्तालिक वुजू

1. बिला नीयत वुजू से नमाज अदा हो जायेगी। (दुर्रे मुख्तार जिल्द 1 सफा 49)
2. बेतरतीब वुजू करे (पहले पाव धोए, फिर मूंह फिर कुल्ली वगैरह) तो जाइज है (हिदाया जिल्द 1 सफा 28, बहेश्ती जेवर हिस्सा 1 सफा 57)
3. आजाए वुजू पर मक्खियों का गू (पाखाना) लगा हो और पानी इस के नीचे न पहूंचे तो वुजू जाईज है (आलमगीरी जिल्द 1 सफा 5)

बाब मुत्तालिक मिस्वाक

1. मिस्वाक को मुट्ठी मे पकड़ने से बवासीर पैदा होती है। (दुर्रे मुख्तार जिल्द 1 सफा 53)
2. मिस्वाक को चुसने से आदमी अंधा हो जाता है। (दुर्रे मुख्तार जिल्द 1 सफा 53)
3. मिस्वाक करके ना धोने से शैतान मिस्वाक करता है। (दुर्रे मुख्तार जिल्द 1 सफा 53)
4. मिस्वाक एक बालिश्त से ज्यादा लंबी रखने से शैतान सवार होता है। (दुर्रे मुख्तार जिल्द 1 सफा 53)

बाब बयान मे इन चीजों के जिन से वुजू नहीं टूटता

1. बाहम नंगे मर्द और औरत की शर्मगाहे मिल जाने से वुजु नहीं टूटता (दुर्रे मुख्तार जिल्द 1 सफा 69)(वाह.. वाह जबकि अल्लाह के रसुल सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जब शर्मगाह से शर्मगाह मिल जाये तो वुजू जाता रहा– बुखारी)

2. ऊंगली औरत के अगले मकाम मे दाखिल की अगर खुश्क निकली तो वुजू नहीं टूटता । (दुर्रे मुख्तार जिल्द 1 सफा 70)(ऐ अल्लाह गवाह रह ये मसाएल हम नही लिखना चाहते थे, मगर अफसोस लिखना पढ़ रहा है)
3. जिन्दा या मुर्दा जानवर या कम उम्र लड़की से जिमाए(हमबिस्तरी) किया तो वुजू नहीं टूटता । (दुर्रे मुख्तार जिल्द 1 सफा 83)

बाब पानी के बयान में

1. दस गज के हौज मे आदमी का पेशाब या नजासत पड़ जाये तो वो पाक है । (दुर्रे मुख्तार जिल्द 1 सफा 95)
2. दस गज के हौज मे कुत्ता मरा पड़ा हुआ तो दुसरी तरफ से वुजू जाईज है । (बहेश्ती जेवर हिस्सा 1 सफा 76)इख्तेलाफ
3. हौज मे जिस जगह नजासत गिरे इसी जगह से वुजू जाईज है । (आलमगिरी जिल्द 1 सफा 23)

बाब कुंए के मुत्तालिक

1. कुंए मे कुत्ता गिर जाए अगर मूंह न डूबे तो पानी पाक है । (दुर्रे मुख्तार जिल्द 1 सफा 105, हिदाया जिल्द 1 सफा 112)
2. चूहे की दुम कट कर गिर जाये तो सारा पानी निकालना चाहिये । (बहेश्ती जेवर हिस्सा 1 सफा 81)
   (हा हा हा .... गौर फरमाईये दोनो कौल पर)(क्या यही वो दीन है जो अल्लाह का पसंदीदा है)
3. चूहे की पेशाब अगर कुंए मे पड़ जाये तो पानी निकलने की जरूरत नहीं ।(दुर्रे मुख्तार जिल्द 1 सफा 111)

बाब आम नजासतो के मुत्तालिक

1. जिस्म के किसी हिस्से पर अगर नजासत (पखाना वगैरह) लगी हो तो तीन बार चाटने से पाक हो जाती है ।(बहेश्ती जेवर हिस्सा 2 सफा 18, आलमगिरी जिल्द 1 सफा 61)

2. नजासत से भरा कपड़ा इस कद्र चाटे कि नजासत का असर जाता रहे तो पाक है । (आलमगिरी जिल्द 1 सफा 61)

बाब शराब के मुत्तालिक

1. शराब का सिरका बन जाये तो पाक है । (दुर्रे मुख्तार जिल्द 4 सफा 263)
2. प्यासे को शराब पीना जरूरतन जाईज है । (दुर्रे मुख्तार जिल्द 1 सफा 106)
3. जो गोश्त शराब मे पकाया गया हो वो तीन बार जोश देने और खुश्क करने से पाक है । (दुर्रे मुख्तार जिल्द 1 सफा 157)
4. जो गेंहू शराब मे पकाया गया हो वो कई बार जोश देकर सुखाने से पाक हो जाता है । (दुर्रे मुख्तार जिल्द 1 सफा 158)
5. शराब मे गूंदे हुए आटे से रोटियां पकाई गई अगर इस कदर सिरका डाला जाये की शराब का असर जाता रहे तो पाक है । (दुर्रे मुख्तार जिल्द 1 सफा 158)

बाब कुत्ते के मुत्तालिक

1. कुत्ता नाजिसउल ऐन नहीं है (दुर्रे मुख्तार जिल्द 1 सफा 105)
2. मिट्टी के बर्तन मे कुत्ता मूंह डाले तो तीन बार धोने से पाक है । (बहेश्ती जेवर हिस्सा 1 सफा 82)
3. कुत्ते की खरीद फरोख्त जाईज है । (हिदाया जिल्द 1 सफा 112)

बाब अज़ान के बयान मे

1. अज़ान फारसी वगैरह हर जबान मे जाईज है, अगर लोग ये समझ ले कि अज़ान हुई है । (दुर्रे मुख्तार जिल्द 1 सफा 225)

बाब नमाज की कैफियत मे

1. नमाज़ मे रोज़े की नियत करे तो दुरूस्त है । (दुर्रे मुख्तार जिल्द 1 सफा 205)
2. शुरू करना नमाज का अरबी के सिवा दुरूस्त है अगरचे अरबी जबान जानता हो । (दुर्रे मुख्तार जिल्द 1 सफा 210)

3. बजाए अल्लाहो अकबर के सुब्हान अल्लाह या ला इलाहा इल्लल्लाह कहे तो जाईज है । (आलमगिरी जिल्द 1 सफा 92)

बादशाह सुल्तान मेहमूद गजनवी इमाम अबू हनीफा रह0 के मजहब पर थे और ईल्म हदीस का शौक रखता था और मशाईख से हदीस सुनता सुनाता था, पस अक्सर हदीस को उसने शाफई मजहब के मवाकिफ पाया पस इस ने फकीहो को जमा किया और इन से एक मजहब के दूसरे मजहब पर तरजीह का मुतालबा किया तो इस बात पर सब का इत्तेफाक हुआ कि दोनो मजहब के मवाकिफ दो दो रकअत नमाज पढ़ी जाये । पस इस नमाज मे नजर व फिक्र करने से जो मजहब अच्छा मालूम हो इस को इख्तेयार करना चाहिये । पस काफिल मरूजी रह0 ने नमाज पढ़नी शुरू की तो वुजू को पूरे शर्तो से अदा किया और लिबास और इस्तकबाल किबला भी बखूबी किया और नमाज के अरकान फर्ज और सुन्नतो और आदाब को बखूबी कमाल अदा किया और ऐसी नमाज पढ़ी जिससे कमी करना इमाम शाफाई रह0 के नजदीक दुरूस्त नहीं। फिर और दो रकअत इस तौर से अदा किया कि जो इमाम अबू हनीफा रह0 के नजदीक जाईज हो, पस कुत्ते की खाल दबागत दी हुई को पहन लिया और इस को चौथाई नजासत से आलूदा किया, और नबीस खजूर से वुजू किया, चूंकि गर्मी का मौसम था इस लिये मक्खियां और मच्छर इस पर जमा हो गये, और बेनियत के वूजू किया किया और वुजू भी उल्टा (यानि पहले बांया पाव धोया फिर दाहिना, फिर बांया हाथ धोया फिर दाहिना, फिर चौथाई सर का मसाह किया वो भी उल्टा, फिर उल्टा मूंह धोया, फिर तीन बार नाक मे पानी दिया, फिर तीन बार कुल्ली की, फिर हाथ धोए) । फिर नमाज मे दाखिल हुआ तो बजाए तकबीर के फारसी जबान मे कहा, फिर किरअत भी फारसी मे की, फिर बजाए सजदे के मुर्गे की तरह बगैर फर्क व बिला इतमिनान के दो ठोंगे मार लिये और तशहदूद पढ़ा, फिर बजाए सलाम के गोज मार दिया और नमाज से बगैर सलाम के निकला और कहा ऐ बादशाह ये नमाज इमाम अबू हनीफा रह0 की है । बादशाह ने कहा अगर इस तरह की नमाज इमाम अबू हनीफा रह0 की न हुई तो मै तुमको कत्ल कर डालूंगा । इसलिये कि ऐसी नमाज तो कोई सहाबे दीन जाईज न रखेगा । पस हनफियो ने इमाम अबू हनीफा रह0 की इस तरह नमाज होने से इंकार कर दिया (जैसे अब भी कर जाते है) तो काफिल मरूजी रह0 ने हनफी मजहब की किताबे तलब की, बादशाह ने मंगवा दी और एक नसरानी को बुलाया और उसको शाफाई और हनफी मजहब की किताबे पढ़ने को हुक्म दिया तो अबू हनीफा रह0 के मजहब की नमाज वैसी ही पाई गई जैसी कि कफाल मरूजी रह0 ने पढ़ कर दिखाई थी । तो मेहमूद गजनवी ने इमाम अबू हनीफा रह0 के मजहब को छोड़ दिया और शाफाई मजहब को इख्तेयार कर लिया ।

ऐ मेरे मुकर्रम अहनाफ अगर आप भी मेहमूद गजनवी की तरह इमानदार है तो इस मजहब को खैरबाद कहिये या वरना कम से कम इसकी तसदीक कर दीजिये ।

4. औरत सीने पर हाथ बांधे (दुर्रे मुख्तार जिल्द 1 सफा 226)
5. मुकतदी का सुरह फातेहा पढ़ना मकरूह तहरीमी है मगर नमाज सहीह होगी । (दुर्रे मुख्तार जिल्द 1 सफा 252)
6. नमाजे जनाजा मे सुरह फातेहा पढ़े तो जाइज है । (दुर्रे मुख्तार जिल्द 1 सफा 87)
7. अगर पिछली दो रकअतो मे अलहम्दुल्लाह व तसबीह छोड़ दे तो कोई जुर्म नही । (आलमगिरी जिल्द 1 सफा 102)
8. पिछली दो रकअतो मे बजाए सुरह फातेहा के तीन दफा सुब्हानल्लाह कहे तो दुरूस्त है । (बहेश्ती जेवर हिस्सा 2 सफा 39)
9. पिछली दो रकअतो मे अगर कुछ भी न पढ़े तो दुरूस्त है । (बहेश्ती जेवर हिस्सा 2 सफा39)
10. अगर मुसाफिर कसर करे तो मुकतदी पूरी कर ले मगर मुकतदी बकिया रकअतो मे सुरह फातेहा न पढ़े । (कंज सफा 59)
11. औरत अत्तहीयात के वक्त अपने दोनो पांव को दाहिनी तरफ निकाल कर चुतड़ो पर बैठे । (आलमगिरी जिल्द 1 सफा 102)
12. दरूद पढ़ना हमारे नजदीक फर्ज नहीं है । (हिदाया जिल्द 1 सफा 398)
13. सलाम के वक्त हवा खारिज करे (पाद मारे) तो नमाज फासिद नहीं होती, सलाम फेरने की जरूरत नहीं । (दुर्रे मुख्तार जिल्द 1 सफा 245)

बाब बयान मे इन उमूर के जिन से नमाज फासिद नहीं होती

1. पेशाब की जगह या कही नजासत लगी हो गो बकसरत हो तो नमाज जाईज है । (दुर्रे मुख्तार जिल्द 1 सफा 159)
2. नमाजी जुनुबी आदमी या कुत्ता मूंह बंधा लेकर नमाज पढ़े तो जाईज है । (दुर्रे मुख्तार जिल्द 1 सफा 187)
3. नमाजी के जिस्म पर कुत्ता बैठ जाये और मूंह से लार न निकले तो कोई हर्ज नही । (बहेश्ती गोहर 33)
4. नमाजी सलाम का जवाब इशारे से दे तो नमाज फासिद नहीं होती । (दुर्रे मुख्तार जिल्द 1 सफा 281)

5. मर्द नमाज पढ़ रहा है और औरत ने बोसा लिया तो नमाज फासिद नहीं होती । मगर हां मर्द ने नमाजी औरत का बोसा लिया तो औरत की नमाज फासिद होगी । (दुर्रे मुख्तार जिल्द 1 सफा 293)

बाब मुत्तालिक नमाज में

1. अफआल नमाज में तरतीब शर्त नहीं । (हिदाया जिल्द 1 सफा 487)
2. अगर किबला मे शक हो तो चार रकअत चारो तरफ पढ़े ।
3. नमाज मे दरवाजा बंद किया तो नमाज फासिद न होगी हां मगर खोला तो नमाज फासिद हो गई । (आलमगिरी जिल्द 1 सफा 143)
4. जो काफिर बा जमाअत नमाज पढ़ ले तो वो मुसलमान है । (हिदाया जिल्द 1 सफा 251)
5. सजदा तिलावत महज रूकू से भी अदा हो जाता है । (दुर्रे मुख्तार जिल्द 1 सफा 353)
6. फौत शुदा नमाज के बदले कफ्फारा देना जाईज है । (दुर्रे मुख्तार जिल्द 1 सफा 336)
7. कुनूत न पढ़े किसी नमाज मे सिवाए वित्र के । (हिदाया जिल्द 1 सफा 533)
   (आगे जाकर मजेदार लतीफा सुनिये)
8. नमाज़े फजर मे कुनूत पढ़ना चारो खुलफाए राशेदीन और अकसर सहाबा रदि0 से साबित है । (हिदाया जिल्द 1 सफा 534)
   (दोनो कौलो पर अल्लाह के वास्ते गौर फरमाईये, मत खयानत करिये अल्लाह के दीन मे)

बाब ज़कात

1. ज़कात न देने का हीला ये है कि जिस के पास माल हो बकदर निसाब साल गुज़रने से पहले एक दिरहम खैरात कर दे या बाज दिरहम अपनी औलाद को हिबा कर दे ताकि माल निसाब से कम हो जाये तो ज़कात वाजिब न होगी । (दुर्रे मुख्तार जिल्द 1 सफा 455)
2. जो शख्स ज़कात अपने कर्जे मे वसुल करना चाहे तो इस का हीला ये है कि अपने कर्जदार मोहताज को ज़कात हवाला करे फिर इस को वापिस अपने कर्जे मे वसुल कर ले । और अगर वो न दे तो छीन ले । (दुर्रे मुख्तार जिल्द 1 सफा 436)
   (अब भी बोलोगें हर मसला कुरआन व हदीस से है)

बाब शक के रोजे के मुत्तालिक

1. शक के दिन का रोजा खास रखे इस तरह कि अवाम को न मालूम हो । (दुर्रे मुख्तार जिल्द 1 सफा 501)
2. शक के दिन नफ़्ल की नीयत से रोजा रखना अफ़ज़ल है । (दुर्रे मुख्तार जिल्द 1 सफा 501)

बाब उन चीजो के जिन से रोजा फासिद नहीं होता

1. औरत की शर्मगाह की तरफ देखने से अगर इंजाल हो जाये अगरचे देर तक देखने और फिक्र करने के बाद हो तो रोजा फासिद नहीं होता ।(दुर्रे मुख्तार जिल्द 1 सफा 509)
2. दबर या फरज (औरत की शर्मगाह) मे ऊंगली की अगर खुश्क निकली तो रोजा फासिद नहीं । (दुर्रे मुख्तार जिल्द 1 सफा 511)
3. रोजे मे हाथ से मनी निकालने पर रोजा फासिद नहीं । (दुर्रे मुख्तार जिल्द 1 सफा 512)
4. मुर्दा औरत से वती की या छोटी लड़की से तो रोजा फासिद नहीं है । (दुर्रे मुख्तार जिल्द 1 सफा 515)

   (और भी है मसले मगर अब शर्म आती है)

बाब सूद के बयान मे

1. मुसलमान मुसलमान से दारूल हर्ब मे सूद ले तो जाईज है । (अबू हनीफा रह0) आलमगिरी जिल्द 3 सफा 190, विकाया सफा 396)

   (मैने खुद देखा है धमतरी के पूरे तेली मुसलमान नकद सूद लेते है, अल्लाह इनको, इन मसअलो को बनाने वालो को, फतवा देने वालो को नेस्तनाबूद कर दे, आमीन या रब्बुल आलेमीन)

बाब वित्र के मुत्तालिक

1. वित्र एक रकअत भी है । (हिदाया जिल्द 1 सफा 528, शरह विकाया सफा 125)
2. एक वित्र पर मुसलमानो का इज्माअ हो चुका है । (हिदाया जिल्द 1 सफा 529)
3. तीन वित्र की रिवायत जईफ है । (शरह विकाया सफा 124)(सभी हनफी फिर भी तीन वित्र ही पढ़ते है)

4. वित्र एक, तीन, पांच, सात रकअत है । (हिदाया जिल्द 1 सफा 526, शरह विकाया सफा 123)
5. कुनूत मे दोनो हाथ उठा कर छाती तक दुआ मांगने की तरह हथेलियँ आसमान की तरफ रखे (अबू युसूफ रह0)(दुर्रे मुख्तार जिल्द 1 सफा 310)**(एक भी हनफी इस बात पर अमल नहीं करता)**

बाब सज्दा ए सूहू के मुत्तालिक

1. सज्दा सुहू सलाम से पहले भी जाईज है । (दुर्रे मुख्तार जिल्द 1 सफा 338)
2. सजदा सुहू दोनो तरफ सलाम फेरने के बाद करें । (दुर्रे मुख्तार जिल्द 1 सफा 338)
3. सज्दा सुहू मे एक तरफ सलाम फेरने वाला बिदअती है ।(हिदाया जिल्द 1 सफा 585) **(हनफी हज़रात गौर फरमाएगें)**

बाब तरावीह के मुत्तालिक

1. तरावीह बीस रकअत की हदीस जईफ है । (दुर्रे मुख्तार जिल्द 1 सफा 326, हिदाया जिल्द 1 सफा 563)
2. तरावीह आठ रकअत की हदीस सहीह है । (शरह विकाया सफा 133)
3. तरावीह सहीह हदीस से मय वित्र के ग्यारह रकअत साबित है । (हिदाया जिल्द 1 सफा 563) **(हनफी हज़रात गौर फरमाएगें अल्लाह के वास्ते)**

और इस तरह के सैकड़ो मसअले है जो कुरआन व हदीस से टकराते है, मगर हम इतने पर ही बस करते है, अगर आप चाहे तो और मसअले आगे सनद के साथ लिखगें । मगर शायद आंख खोलने के लिए इतना काफी होना चाहिये । अल्लाह तआला से दुआ है कि जाती मफाद व तास्सुब छोड़ कर हमारे भाई कुरआन व हदीस पर जमा हो जाये और इस तरह के गंदे मसाइल जो ना तो इमाम साहब ने कहे है और ना इमाम साहब का उन पर अमल रहा होगा को छोड़ दे । और सिर्फ अल्लाह के रसुल सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम के नक्शे कदम पर चलने का इरादा करें ।

इस्लामिक दावाअ सेन्टर,
रायपुर छत्तीसगढ़